"मीठे बच्चे - जैसे बाबा प्यार का सागर है, उनके जैसा प्यार दुनिया में कोई कर नहीं सकता, ऐसे तुम बच्चे भी बाप समान बनो, किसी को रंज (नाराज़) मत करो"

प्रश्नः- किस प्रकार के ख्यालात (विचार) चलते रहें तो खुशी का पारा चढ़ा रहेगा?

उत्तरः- अभी हम ज्ञान रत्नों से अपनी झोली भर रहे हैं फिर यह खानियां आदि सब भरपूर हो जायेंगी। वहाँ (सत-युग में) हम सोने के महल बनायेंगे। 2- हमारा यह ब्राह्मण कुल उत्तम कुल है, हम सच्ची-सच्ची सत्य नारायण की कथा, अमरकथा सुनते और सुनाते हैं... ऐसे ऐसे ख्यालात चलते रहें तो खुशी का पारा चढ़ा रहेगा।

ओम् शान्ति। बच्चे बाप की याद में बैठे हैं, यह श्रीमत अर्थात् श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत मिलती है। याद की यात्रा बहुत मीठी है। बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हैं कि जितना बाप को याद करेंगे उतना बाबा स्वीट लगेगा। सैक्रीन है ना। एक बाप ही प्यार करते हैं बाकी तो सब मार देते हैं। दुनिया सारी एक दो को ठुकराती है। बाप प्यार करते हैं, उनको सिर्फ तुम बच्चों ने जाना है। बाप कहते हैं - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, कितना बड़ा हूँ, बताओ हमारा बाप कितना बड़ा है? तो कहते हैं बिन्दी है और तो कोई जानते नहीं। बच्चे भी घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। कहते हैं भक्ति मार्ग में तो बड़े-बड़े चित्रों की पूजा करते थे। अब बिन्दी को कैसे याद करें? बिन्दी, बिन्दी को ही याद करेगी ना। आत्मा जानती है हम बिन्दी हैं। हमारा बाप भी ऐसे है। आत्मा ही प्रेजीडेन्ट है, आत्मा ही नौकर है। पार्ट आत्मा ही बजाती है। बाप है सबसे स्वीट। सब याद करते हैं हे पतित-पावन, दु:ख-हर्ता सुख-कर्ता आओ। अब तुम बच्चों को यह निश्चय है हम जिसको बिन्दी कहते हैं, वह बहुत सूक्ष्म है परन्तु महिमा कितनी

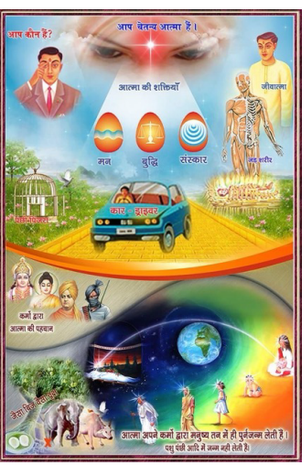

भारी है। भल महिमा गाते भी हैं ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर है, परन्तु समझते नहीं कि वह कैसे आकर सुख देते हैं। मीठे-मीठे चिल्ड्रेन हर एक समझ सकते हैं - कौन-कौन कितना श्रीमत पर चलते हैं। श्रीमत मिलती है सर्विस करने की। बहुत मनुष्य बीमार रोगी हैं, बहुत हैं जो हेल्दी भी हैं। भारतवासी जानते हैं सतयुग में आयु बहुत बड़ी एवरेज 125-150 वर्ष की थी। हर एक अपनी फुल आयु पूरी करते हैं। यह तो बिल्कुल ही छी-छी दुनिया है जो बाकी थोड़ा समय ही है।

Attention Please..!

Please... समय रहते जाग जाओ...

मनुष्य बड़ी-बड़ी धर्मशालायें आदि अभी तक बनाते रहते हैं। जानते नहीं हैं, यह बाकी कितना समय होगी। मन्दिर आदि बनाते हैं, लाखों रूपया खर्च करते हैं। उनकी आयु बाकी कितना समय होगी? तुम जानते हो यह तो टूटे कि टूटे। तुमको बाबा मकान आदि बनाने के लिए कभी मना नहीं करते हैं। तुम अपने ही घर में एक कमरे में

हॉस्पिटल कम युनिवर्सिटी बनाओ। बिगर कोई खर्चा, हेल्थ, वेल्थ, हैपीनेस 21 जन्मों के लिए लेना है, इस नॉलेज से। यह भी समझाया है - तुमको सुख बहुत मिलता है। जब तमोप्रधान बने तब जास्ती दु:ख होता है। जितना-जितना तमोप्रधान बनते जायेंगे उतना दुनिया में दु:ख-अशान्ति बढ़ती जायेगी। मनुष्य बहुत दु:खी होंगे। फिर जय-जयकार हो जायेगी। तुम बच्चों ने जो विनाश, दिव्य दृष्टि से देखा है सो फिर प्रैक्टिकल में देखना है। स्थापना का साक्षात्कार भी बहुतों ने किया है। छोटी बच्चियाँ बहुत साक्षात्कार करती थी। ज्ञान कुछ भी नहीं था। पुरानी दुनिया का विनाश भी जरूर होना है। तुम बच्चे जानते हो - बाप ही आकर स्वर्ग का वर्सा देते हैं। परन्तु बच्चों को फिर पुरुषार्थ करना है, ऊंच पद पाने का। तुम बच्चों को बाप बैठ, यह सब बातें समझाते हैं, वह थोड़ेही जानते हैं कि बाकी थोड़ा समय है। बाप कहते हैं - मैं हूँ दाता, मैं तुमको देने आया हूँ। मनुष्य कहते हैं - पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ।

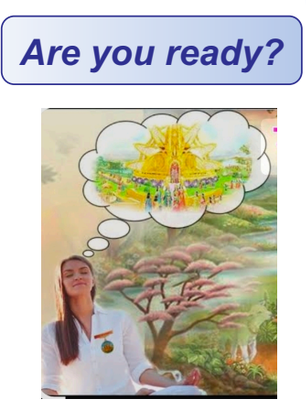

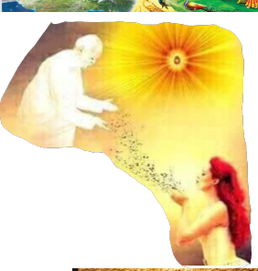

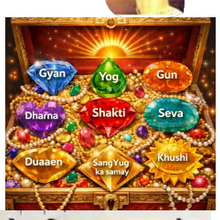

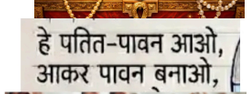

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

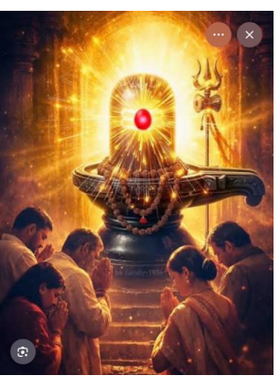

बाप कहते हैं - पहले तुम कितने समझदार थे, सतोप्रधान थे। अभी तो तमोप्रधान बन पड़े हो। तुम्हारी बुद्धि में भी अब आया है, आगे थोड़ेही समझते थे कि हम विश्व पर राज्य करते थे। तुम विश्व के मालिक थे फिर जरूर बनेंगे। हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होगी। बाप ने समझाया है - 5000 वर्ष पहले मैं आया था, तुमको स्वर्ग का मालिक बनाया था। फिर तुम 84 जन्मों की सीढ़ी उतरते हो। यह विस्तार कोई भी शास्त्र में नहीं है।

शिवबाबा ने कोई शास्त्र आदि पढ़ा है क्या? उनको तो ज्ञान की अथॉरिटी कहा जाता है। वो लोग भी शास्त्र आदि पढ़कर शास्त्रों की अथॉरिटी बनते हैं।

वह भी तो गाते हैं - पतित-पावन आओ। गंगा स्नान करने जाते हैं। वास्तव में यह भक्ति है ही गृहस्थियों के लिए।

बाप बैठ समझाते हैं, उनको भी पता नहीं कि सद्गति दाता कौन है। बाप समझाते हैं - तुम मुझे बुलाते भी हो, हे पतित-पावन आओ। मैं तुमको पावन बनाता हूँ। मैं तुमको पढ़ाने के लिए आता हूँ, ऐसे नहीं कि हम

पर कृपा करो। मैं तो टीचर हूँ, तुम कृपा आदि क्यों माँगते हो? आशीर्वाद तो अनेक जन्म लेते आये हो। अब आकर माँ-बाप की मिलकियत का मालिक बनो और आशीर्वाद क्या करेंगे! बच्चा पैदा हुआ और बाप की मिलकियत का मालिक बना। लौकिक बाप को कहते हैं, कि कृपा करो। यहाँ तो कृपा की बात नहीं है। सिर्फ बाप को याद करना है। यह भी किसको पता नहीं है कि बाबा बिन्दू है। अभी तुमको बाप ने बताया है, सभी कहते भी हैं परमपिता परमात्मा, गॉड फादर, सुप्रीम सोल। तो परम आत्मा ठहरे ना। वह है सुप्रीम। बाकी सब आत्मायें हैं ना। सुप्रीम बाप आकर आप समान बनाते हैं और कुछ नहीं है। कोई की बुद्धि में होगा क्या कि बेहद का बाप जो स्वर्ग का रचयिता है, वह आकर स्वर्ग का मालिक बनाते हैं! How Lucky we are...! तुम अभी जानते हो, श्रीकृष्ण के हाथ में स्वर्ग का गोला है। गर्भ से बच्चा बाहर निकलता है तब से आयु शुरू होती है। श्रीकृष्ण तो पूरे 84 जन्म लेते हैं। गर्भ से बाहर आया, उस दिन से 84 जन्म गिनेंगे। लक्ष्मी-नारायण को तो बड़ा होने में 30-35 वर्ष लगे ना।

जी नहीं मेरे मीठे बाबा..

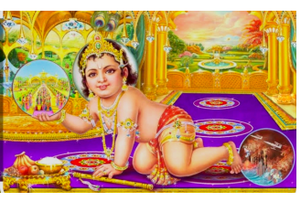

Point to be Noted

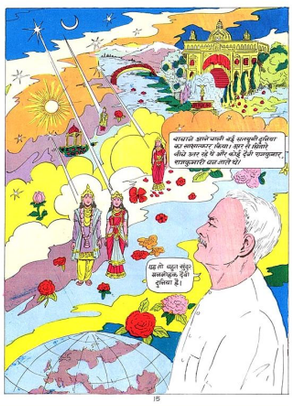

तो वह 30-35 वर्ष 5 हजार से कम करना पड़े। शिवबाबा का तो गिनती नहीं कर सकते। शिवबाबा कब आये, टाइम दे नहीं सकते। शुरू से साक्षात्कार होते थे। मुसलमान लोग भी बगीचा आदि देखते थे। यह नौधा भक्ति तो कोई ने नहीं की। घर बैठे आपेही ध्यान में जाते रहते थे। वह तो कितनी नौधा भक्ति करते हैं।

अभी बाप बैठ सम्मुख समझाते हैं। बाबा दूरदेश से आया है, यह बच्चे जानते हैं। इसमें प्रवेश कर हमको पढ़ाते हैं। लेकिन फिर बाहर जाने से नशा कम हो जाता है। याद रहे तो खुशी का पारा भी चढा रहे और कर्मातीत अवस्था हो जाए, परन्तु उसमें टाइम चाहिए। अब देखो, श्रीकृष्ण की आत्मा को अन्तिम जन्म में फुल ज्ञान है फिर गर्भ से बाहर निकलेंगे, पाई का भी ज्ञान नहीं होगा।

बाप आकर समझाते हैं - श्रीकृष्ण ने कोई मुरली बजाई नहीं। वह तो ज्ञान जानते ही नहीं। लक्ष्मी-

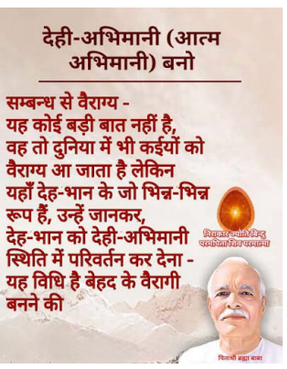

नारायण ही नहीं जानते तो फिर ऋषि, मुनि, संन्यासी आदि कैसे जानेंगे। विश्व के मालिक लक्ष्मी-नारायण ने ही नहीं जाना तो फिर यह संन्यासी लोग कैसे जानेंगे। कहते हैं श्रीकृष्ण सागर में पीपल के पत्ते पर आया, यह किया... यह सब कहानियाँ हैं, जो बैठ लिखी हैं। कहते हैं नदी में पैर डाला तो वह नीचे चली गई, विचार करो - मनुष्य क्या-क्या बातें बना सकते हैं। अब बाप समझाते हैं, कोई भी उल्टी-सुल्टी बातों पर कभी विश्वास नहीं करना। शास्त्र आदि कितने मनुष्य पढ़ते हैं। बाप कहते हैं - पढ़ा हुआ सब भूल जाओ। इस देह को भी भूल जाओ। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेकर पार्ट बजाती है। भिन्न-भिन्न नाम, रूप, देश चोला पहनकर। अब बाप कहते हैं - यह छी-छी वस्त्र हैं। आत्मा और शरीर दोनों पतित हैं। आत्मा को ही श्याम और सुन्दर कहा जाता है। आत्मा पवित्र थी तो सुन्दर थी फिर काम चिता पर बैठने से काले बने हैं। अब फिर बाप ज्ञान चिता पर बिठाते हैं। पतित-पावन बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो यह खाद ही निकल जायेगी।

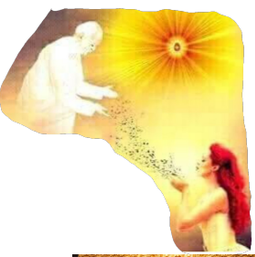

आत्मा में ही खाद पड़ती है। कलियुग अन्त में तुम गरीब हो। वहाँ सतयुग में फिर तुम सोने के महल बनायेंगे। वण्डर है, यहाँ हीरों का देखो कितना मान है। वहाँ तो पत्थरों मिसल होते हैं। अभी तुम बाप से ज्ञान रत्नों की झोली भर रहे हो। लिखा हुआ है सागर से रत्नों की थालियाँ भर ले आते हैं। सागर से जितना भी चाहिए उतना लो। खानियाँ ही भरतू हो जाती हैं। तुमने साक्षात्कार किया है। माया-मच्छन्दर का भी खेल दिखाते हैं। उसने देखा सोने की ईटें पड़ी हैं, ले जाता हूँ। नीचे आया तो कुछ था नहीं। वहाँ तो सोने की ईटों के महल बनायेंगे। ऐसे-ऐसे ख्यालात आने चाहिए तो खुशी का पारा चढ़े। बाप का परिचय देना है। शिवबाबा 5 हजार वर्ष पहले भी आया था, यह किसको पता नहीं है। तुम जानते हो 5 हजार वर्ष पहले आकर तुमको राजयोग सिखाया था, कल्प-कल्प तुमको ही सिखायेंगे। जो-जो आकर ब्राह्मण बनेंगे वह फिर देवता बनेंगे। विराट रूप भी बनाते हैं। उसमें ब्राह्मणों की चोटी गुम कर दी हैं। ब्राह्मणों का कुल बहुत उत्तम गाया जाता है, वह है जिस्मानी। तुम

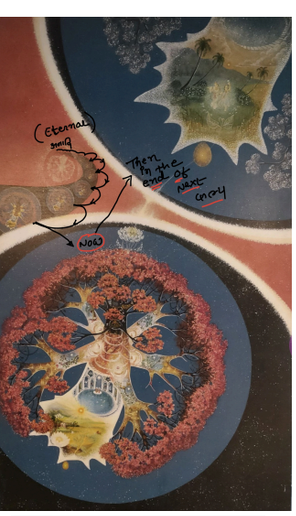

चढ़ाओ नशा... How lucky and Great we are...!

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

हो रूहानी। तुम सच्ची-सच्ची कथा सुनाते हो। यही सत्य नारायण की कथा, अमरकथा है। तुमको अमरकथा सुनाए अमर बना रहे हैं। यह मृत्युलोक खत्म होना है।

Coming soon...

मेरे बाबा मुजे लेने आये है...

हो गई है शाम चलो लौट चले घर....

शिवबाबा कहते हैं - मैं तुमको लेने आया हूँ। कितनी ढेर आत्मायें होंगी। आत्मा वापस घर में जाती है तो कोई आवाज थोड़ेही होता है।

मधुमक्खियों का झुण्ड जाता है तो आवाज कितना होता है। रानी के पिछाड़ी मधुमक्खियाँ सब भागती हैं। उनकी आपस में कितनी एकता है।

भ्रमरी का भी मिसाल यहाँ का है। तुम मनुष्य से देवता बना देते हो। पतितों को तुम ज्ञान की भूँ-भूँ करते हो तो पावन विश्व का मालिक बन जाते हैं।

तुम्हारा है प्रवृत्ति मार्ग, उसमें भी मैजारिटी माताओं की है इसलिए वन्दे मातरम् कहा जाता है।

Definition of ब्रह्माकुमारी वह जो बाप द्वारा 21 जन्म का वर्सा दिलाती है। बाप सदा सुख का वर्सा देते हैं। जो

14-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

सर्विस करेंगे, लिखेंगे-पढ़ेंगे होंगे नवाब...। राजा बनना अच्छा वा नौकर बनना अच्छा। पिछाड़ी के समय तुमको सब मालूम पड़ जायेगा। हम क्या बनेंगे? फिर पछतायेंगे। हम श्रीमत पर क्यों नहीं चले! बाप कहते हैं - फालो करो। ऐसे भी नहीं कोई एक कमरा दे देते हैं, सेन्टर के लिए, खुद मीट आदि खाते रहते हैं। वह पुण्य आत्मा, वह पाप आत्मा, फिर आश्रम नहीं रहेगा। घर में स्वर्ग बनाते हैं तो खुद भी स्वर्ग में होने चाहिए ना। सिर्फ आशीर्वाद पर नहीं ठहरना है। बाप को याद करना है। पवित्र बनाकर ही साथ ले जायेंगे। तुमको तो बहुत खुशी रहनी चाहिए, कितनी भारी लॉटरी मिलती है। बाप को जितना याद करेंगे, उतना विकर्म विनाश होंगे। बाप जितना प्यार, दुनिया में कोई कर नहीं सकता। उनको कहा ही जाता है - प्यार का सागर। तुम भी ऐसे बनो। अगर किसको दु:ख दिया, रंज (नाराज) किया तो रंज होकर मरेंगे। यह कोई बाबा श्राप नहीं देते हैं, समझाते हैं। सुख दो तो सुखी होंगे, सबको प्यार करो। बाबा भी प्यार का सागर है। अच्छा!

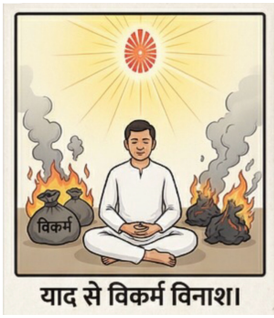

याद से विकर्म विनाश।

Attention Please..!

समझा?

Points: ज्ञान योग धार

14-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) किसी भी उल्टी-सुल्टी बात पर विश्वास नहीं करना है। जो भी उल्टा पढ़ा है उसे भूल अशरीरी बनने का अभ्यास करना है।

Mind very well...

2) सिर्फ आशीर्वाद पर नहीं चलना है। स्वयं को पवित्र बनाना है। बाप को हर कदम में फालो करना है, किसी को भी दु:ख नहीं देना है। नाराज़ नहीं करना है।

Method/Process/Instrument

14-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- सच्ची लगन के आधार पर और संग तोड़ एक संग जोड़ने वाले सम्पूर्ण वफादार भव

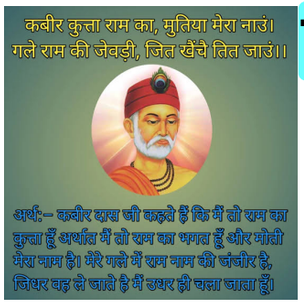

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

Definition of

सम्पूर्ण वफादार उन्हें कहा जाता है जिनके संकल्प वा स्वप्न में भी सिवाए बाप के (1) और बाप के कर्तव्य (2) वा बाप की महिमा (3) के, बाप के ज्ञान (4) के और कुछ भी दिखाई न दे।

एक बाप दूसरा न कोई... बुद्धि की लगन सदा एक संग रहे तो अनेक संग का रंग लग नहीं सकता इसलिए पहला वायदा है और संग तोड़ एक संग जोड़ - इस वायदे को निभाना अर्थात् सम्पूर्ण वफादार बनना।

स्लोगन:- सत्यता की स्व-स्थिति परिस्थितियों में भी सम्पूर्ण बना देगी।

ये अव्यक्त इशारे -

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

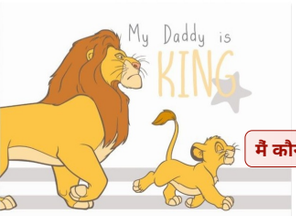

हम ऊंच ते ऊंच बाप के बच्चे हैं, यह याद रहने से एकरस अवस्था रहेगी।

Point to be Noted

जब एक से सम्बन्ध रहता है तब अवस्था भी एकरस रहती है।

अगर और कहाँ सम्बन्ध की रग जाती है तो एकरस अवस्था नहीं रहेगी।

तो एकरस अवस्था बनाने के लिए सिवाए एक के और कुछ भी देखते हुए न देखो।

imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

वरदान slogans April 26 → Click

अव्यक्त इशारे April 26 → Click

मन मत

माया वास्तव में क्या है
और
कैसे माया को समझ सकते हैं व उसे जीत सकते हैं?

माया को अगर सबसे सरल रीति समझना है तो एक कंप्यूटर प्रोग्रामर जो कि कंप्यूटर की कोडिंग करता है जिसे हम software या Application भी कहते है
और उस कोडिंग को चलाने/Run करने के लिए इलेक्ट्रिसिटी चाहिए तो इन तीनों से माया को ऊपर ऊपर से समझ सकते हैं

इस बेहद सृष्टि नाटक में सभी आत्माएं चैतन्य एक्टर्स है मीठे ब्रह्मा बाबा इस सारी सृष्टि का coding(नियम सूची) करने वाले वह प्रोग्रामर है इसी कारण से शास्त्रों में ब्रह्मा बाबा को श्रृष्टि के रचयिता या जगत पिता कहा गया है
साथ ही जो यह कोडिंग होती है उसको चलाने/रन करने के लिए इलेक्ट्रिसिटी अर्थात ऊर्जा चाहिए वह मिलती है शिव बाबा से
और इसी कारण से शिव बाबा हमेशा ही ड्रामा के बाहर रहते हैं जो की ब्रह्मा बाबा के द्वारा किए हुए coding को निरंतर ऊर्जा प्रदान करते रहते हैं और इसीलिए भक्ति मार्ग में शास्त्रों में परमात्मा को सर्वव्यापी कहा है क्योंकि जैसे किसी सॉफ्टवेयर या प्रोग्रामिंग में इलेक्ट्रिसिटी सब जगह से फ्लो होगी तभी वह प्रोग्राम रन करेगा उसी प्रकार यह सारी सृष्टि जो है उसमें शिव बाबा की ऊर्जा प्रवाहित होती है तो इसी कारण से उन्होंने शिव बाबा को सर्वव्यापी कह दिया है
असूल में/एक्चुअल में शिव बाबा सर्वव्यापी नहीं है किंतु उनकी ऊर्जा सारी सृष्टि में व्याप्त/सर्व व्यापी है और निरंतर/constant है

एक्चुअल में जो मीठे बाबा ने बताया है वही तीन लोक है
लेकिन आप इसको ऐसे समझे कि programmer के पास जो कंप्यूटर है वह अनलिमिटेड स्टोरेज वाला सुपर कंप्यूटर या quantum computer है तो उसमें असंख्य एप्लीकेशन या सॉफ्टवेयर ऐड करके रन करा सकते है

वैसे ही इस भक्ति मार्ग में यह असंख्य ब्रह्मांड(multi verse या कहो कि वर्चुअल वर्ल्ड) दिखाएं है वो और कुछ नहीं है सिर्फ ब्रह्मा बाबा के संकल्प की रचना है - आखिर भी ब्रह्मा बाबा है तो सारी सृष्टि के पिता ही ना, चाहे कोई उन्हें पिता माने या ना माने पिता हमेशा पिता ही होता है, जो बच्चों पर हमेशा रहम दिल होता है चाहे वह सपूत हो या कपूत
जो आत्माएं मुक्ति में होगी उनके लिए भी कुछ तो चाहिए ना

यह माया जो है वह अनंत है
इसको ऐसे समझो:-
1 के बाद 2 आएगा 3 आएगा 4 आएगा उसको आप आगे से आगे लिखते जाओ लाख, 10 लाख, करोड़, 10 करोड़, अरब, 10 अरब और उससे भी आगे आपको जहां तक गिनती आती है .....
आपको गिनती आना खत्म हो जाएगा लेकिन नंबर तो उससे भी आगे चलता ही जाएगा अर्थात हमें उस फिगर/अंकों का मूल्य क्या बोलना है वह नहीं मालूम होगा लेकिन वो मूल्य अपना अस्तित्व जरूर रखेगा और वह मूल्य आगे से आगे बढ़ता ही चला जाएगा अनंत तक/infinitely तो इस ही प्रकार से माया भी अनंत है

कोई भी माना कोई भी अपने आप से/अपने बल बूते पर इस माया को पार नहीं कर सकता
वह फिर चाहे ब्रह्मा बाबा-The creator खुद ही क्यों ना हो , जिन्होंने स्वयं (शिव बाबा के मार्गदर्शन में) इस ड्रामा को रचा (ड्रामा में श्री कृष्ण बन कर आने से लेकर 84 वे जन्म में जब तक स्वयं शिव बाबा ने उनके तन में प्रवेश किया तब तक)

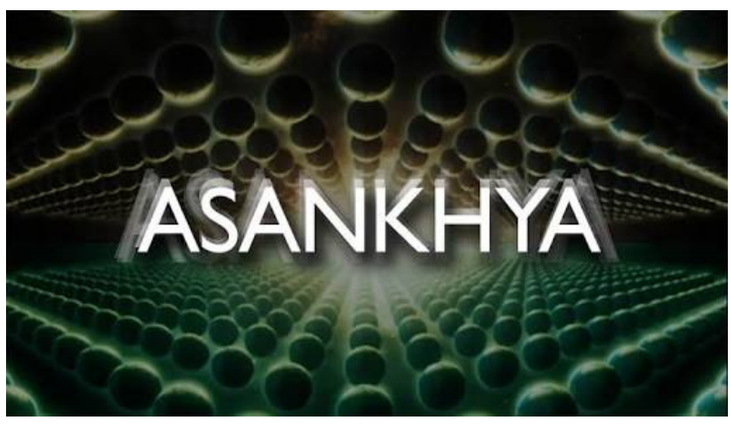

माया को कैसे जाने...?

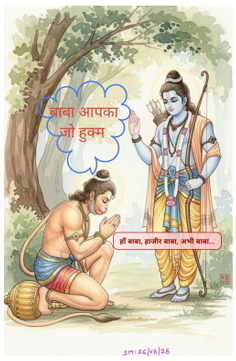

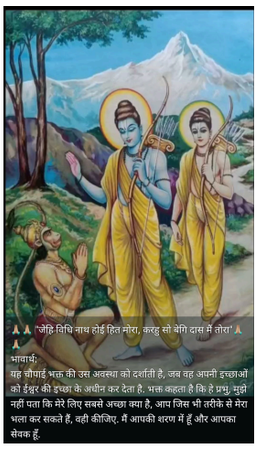

गीता के 7वें अध्याय के 14 श्लोक में यह संपूर्ण स्पष्ट रीति बताया है कि अगर त्रिगुणी माना सतो रजो तमो गुण से निर्मित माया को जानना है तो हमें परमात्मा अर्थात शिव बाबा की शरण में संपूर्ण समर्पण होकर चलना होगा - ये एकमात्र उपाय है

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥

क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस मायाको उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं॥ १४॥ अध्याय - 7

दूसरे शब्दों में ...

मेरी दिव्य शक्ति माया, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, पर विजय पाना अत्यंत कठिन है।
परन्तु जो मुझमें शरणागत हो जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर लेते हैं।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥

हे भारत! तू सब प्रकारसे उस परमेश्वरकी ही शरणमें* जा। उस परमात्माकी कृपासे ही तू परम शान्तिको तथा सनातन परमधामको प्राप्त होगा॥ ६२॥

* लज्जा, भय, मान, बड़ाई और आसक्तिको त्यागकर एवं शरीर और संसारमें अहंता, ममतासे रहित होकर केवल एक परमात्माको ही परम आश्रय, परमगति और सर्वस्व समझना तथा अनन्यभावसे अतिशय श्रद्धा, भक्ति और प्रेमपूर्वक निरन्तर भगवान्‌के नाम, गुण, प्रभाव और स्वरूपका चिन्तन करते रहना एवं भगवान्‌का भजन, स्मरण रखते हुए ही उनके आज्ञानुसार कर्तव्यकर्मोंका निःस्वार्थभावसे केवल परमेश्वरके लिये आचरण करना यह 'सब प्रकारसे परमात्माके ही शरण' होना है।

कोई भी मनुष्य आत्मा को अपना आधार नहीं बनाना है,
यह बात कुछ हद तक ठीक है कि जब तक हम ज्ञान में नये होते है तो हमें निश्चय इतना पक्का नहीं होता है तब तक हम किसी के क्लास सुने या किसी से ज्ञान योग के लिए कुछ हद तक मदद ले

लेकिन अगर हमें माया को संपूर्ण रीति जानना है एवं उसके सामने विजयी होना है तो हमारा आधार सिर्फ और सिर्फ शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा और मम्मा यह तीन ही होने चाहिए - इससे आगे कोई भी माना कोई भी नहीं

दूसरे किसी को भी क्यों फॉलो नहीं करना है।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

सम्पूर्ण धर्मोंको अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मोंको मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार परमेश्वरकी ही शरणमें[1] आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर॥ ६६॥ The World Almighty's Guarantee

जो भी आत्माएं हमें माया के बारे में या किसी भी ज्ञान के राज की स्पष्टता के बारे में कुछ भी समझाएंगे उसमें कुछ ना कुछ तो त्रुटि रह ही जाएगी

अब इसमें हम दो उदाहरण लेते हैं

पहला उदाहरण:

मान लो कि एक ब्राह्मण आत्मा जिसको नाम मान शान की कुछ भी नहीं पड़ी है उस को 97% या 99% मालूम पड़ चुका है की माया क्या है (100% क्यों नहीं? क्योंकि अभी कोई भी संपूर्ण नहीं बना है ब्रह्मा बाबा के सिवाय)

तो अब यह आत्मा आपको अपने सच्चे दिल से आपको जो कुछ भी समझाएगी वह ऐसा होगा जैसे की मान लो कोई 12वीं कक्षा का विद्यार्थी दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी को मैथमेटिक्स के 12 वीं कक्षा के Problems को समझाता हो जो कि उसने पहली कक्षा से लेकर 11वीं कक्षा तक को अपने बल बूते पर पार करके सब कुछ अर्जित करके अब 12वीं कक्षा में पहुंचा है(उसकी खुद की कमाई)
लेकिन वह दूसरी कक्षा का विद्यार्थी बेचारा उसको कैसे ग्रहण कर सकेगा क्योंकि उसकी बुद्धि वहां तक पहुंची ही नहीं है व पहुंच ही नहीं सकती

दूसरा कि वह जो अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा हमें समझा रही है उनकी अपूर्णता भी अर्थात उनमें जो कमी कमजोरीया है वो भी हमारे अंदर unconsciously transfer होकर घर करती जाती है - फिर उसको निकालने के लिए अलग से मेहनत करनी पड़ेगी और अब हमारे पास समय है कहां....?

और सबसे बड़ी बात
जरा सोचो कि दूसरों को (अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा) फॉलो करते-करते अगर यह शरीर छोड़ना पड़े तो अंत मति सो गति क्या होगी?
हमको ऐसा लगता है कि उसमें क्या है अंत में तो हम बाबा को याद करते ही शरीर छोड़ेंगे
लेकिन नहीं, "बहुत काल का अभ्यास ही अंत में काम में आयेगा एवं अंत में किसी भी देहधारी की याद ना हो सिवाय एक बाबा के" - भगवानुवाच

तो इसीलिए एक बार थोड़ा सा भी निश्चय हो जाने के बाद हमें मुरली को ही अपना आधार बनाना है

100 % Advantage

क्योंकि मुरली पढ़ते हैं तो वह मुरली है शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा का मन और उनके मन से ही तो यह संपूर्ण ब्रह्मांड/माया क्रिएट हुई है एवं वह दोनों 100% है तो उनके द्वारा जो भी श्रीमत मिलेगी वह हमें 100% बनाएगी- रिंचक मात्र भी त्रुटि नहीं।

फिर पुजारी बनते हो। तो पहली बात है, बाप को याद करो। बाप को याद करने का अभ्यास करने से धारणा होगी। एक के साथ प्रीत नहीं है तो फिर और और के साथ लग जाती है। ऐसी-ऐसी

Most imp Subtle Psychology

12/05/26

इसीलिए जब हम मुरली पढ़ते हैं तो हमारा मन भी बापदादा के साथ ऑटोमेटेकली ही जुड़ जाता है जिससे कि उनकी याद स्वतः ही रहती है और याद के कारण हमारे विकर्म दग्ध होते है और इसी के चलते हमारी बुद्धि की जो ग्रहण शक्ति है वह बढ़ती है एवं धारणा भी स्वतः ही होती जाती है जिसके अंतिम फल स्वरूप माया को हम संपूर्ण रीति समझ जाते हैं

यह तो दुनिया में भी कहते हैं कि अगर किसी दुश्मन को जीतना है तो सबसे पहले उस दुश्मन की स्ट्रैंथ और वीकनेस - इसको जानना चाहिए अर्थात दुश्मन को जानना चाहिए अगर दुश्मन को जान लिया तो उसको हराना कोई बड़ी बात नहीं।

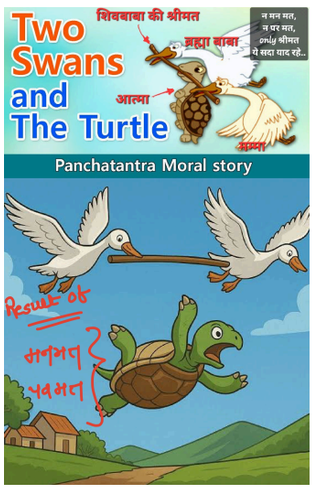

और यह हमेशा याद रहे की जो हम खुद अपने बलबूते पर कमाते हैं वही साथ में रहता है इसीलिए मीठे बाबा कहते हैं कि अपनी घोट तो नशा चढ़े
किसी के द्वारा दिया गया कुछ भी Temporary खुशी देगा लेकिन वह अपनी कमाई नहीं है इसीलिए वह खुशी स्थाई नहीं रहेगी

दूसरा उदाहरण:

आजकल यह दूसरे उदाहरण वाली कैटेगरी के ज्यादा देखने में आते हैं
जिनको ज्ञान की सच्ची गहराई क्या है वो पता ही नहीं है लेकिन नाम मान शान के चक्कर में कुछ भी ज्ञान देते रहते हैं
अब सोचो कि उनसे ज्ञान हमने लिया तो एक तो समय हमारे पास already कम है और दूसरा कि वह अधूरा ज्ञान हमको बाबा से ओर ही दूर ले जाएगा
और इतने में ही समय समाप्त हो गया तो...? (चाहे स्वयं का शरीर छूट जाए या विनाश हो जाए - किसी भी रीति से) ***Point to ponder deeply...***